Saarth
E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

भारतीय दर्शन में काल चिन्तन

Dr. Urmila Bhalsod

काल :- हमारे सभी अनुभव किसी न किसी काल विशेष में होते हैं | जैसे हम कहते हैं, आज कितनी गरमी हैं, काल कितना सुहाना मौसम था, अत: हमारे समस्त अनुभव काल के ही अलग-अलग रुप भूत, वर्तमान और भविष्य में ही निश्चित होते हैं | भूत,भविष्य और वर्तमान के पूर्वापर क्रम से एक व्यावहारिक विभाजन हैं | जब हम काल का दार्शनिक द्रष्टि से विवेचन करते हैं तो हमारे समक्ष अनेक प्रश्न उपस्थित होते हैं | क्या काल का विभाजन उचित हैं ? काल मैं कोई तारतम्य हैं या विभाजन उचित हैं ? काल का स्वरूप क्या हैं ? क्या काल की वस्तुगत सता हैं अथवा हमारे मन की उपज हैं ?१

हम देखते हैं की जहाँ पर परमतत्व कालातीत है और आध्यात्मिक अनुभव कोई विभाजन नहीं होता हैं | वही पर सांसरिक वस्तुओ में पूर्वापर क्रम होता हैं | एक काल क्रम में वह उत्पन्न होती हैं और एक काल क्रम मे नष्ट होती हैं, इस क्रम को बदला नहीं जा सकता है | भूत, भविष्य और वर्तमान नहीं हो सकता हैं | हम यह भी जानते है की जिस कल रूपी पहिए के नीचे वर्तमान हिस्से से हम दबे है। अगले ही क्षण मे वह भूत को जाता है और जिस भविष्य का हम इंतजार कर रहे हैं वह हमे आकर घेर लेता है | इस प्रकार निरंतर वर्तमान - वर्तमान भूत और भविष्य वर्तमान बनता है | काल के संदर्भ में विभिन्न दार्शनिको के विभिन्न मंतव्य है | सामान्यत: काल को बिना सत्य स्वीकार किये न जगत घटित हो सकता है। न किसी अनुभवो को भी स्वीकार किया जा सकता है | अत: जिन दार्शनिको ने काल की सता को सत स्वीकार किया है उनके दर्शन मे नैतिकता, धर्म और उनके आध्यात्मिक अनुभव की असत्य सिध्ध होता है | दूसरी और जिन दर्शनकों ने काल की सता और सत स्वीकार किया है |२ उनके दर्शन में यह कठिनाई उत्पन्न होती है |

दार्शनिको ने काल को आदि और अनंत बताया है, क्योकि आदि और अंत का जो बिन्दु हम निश्चित करेंगे उसका काल अवश्य बतायेंगे और एसा करनेसे हमारे सामने भूत, वर्तमान और भविष्य का भी प्रश्न आयेगा | इस प्रकार काल का हम पल, घड़ी, दिन, माह, वर्ष आदि में विभाजन करते है | दूसरी ओर काल समरस और निरंतर है | वह अलग-अलग क्षणों का योग मात्र नहीं | वह एक निरंतर प्रवाह है जिसमे भविष्य वर्तमान में और वर्तमान भूत की और बहता रहता है |३

काल सम्बन्धी विभिन्न सिद्धांत :-

(१) वस्तुगत काल :- इस मत के दार्शनिको ने काल की मन से स्वतंत्र सता स्वीकार की है | इस मत के समर्थको में उकाई आदि मुख्य हैं |

(२) आत्मगत काल:- इस मत के दार्शनिक ने काल को घटनाओं की परंपरा से निकाला हुआ एक अमूर्त विचार मात्र माना गया है | इस प्रकार काल आत्मगत हुआ और इस मत के समर्थको में अनुभववादी दार्शनिक लॉक, बर्क्ले और ह्यूम प्रमुख है |

(३) अनुभव पूर्व साँचा :- ईमेन्यूअल कान्त ने काल सम्बन्धी बुद्धिवादी और अनुभववादी अवधारणाओं का खंडन करके काल को अनुभव पूर्व प्रत्यय या साँचा माना है। जिसमें वस्तु जगत के समस्त अनुभव विशिष्ट काल में से होकर गुजरते है | प्रत्येक अनुभव काल के साँचे से गुजर कर हम तक पहुंचता है| अत: काल अनुभव पूर्व एक साँचा है जिसकी छाप प्रत्येक अनुभव पर पड़ती है |

---

*Dr. Urmila Bhalsod, Assistant Professor, Dept. of Philosophy, Gujarat arts and science college, Ahmadabad - 6

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

(४) द्वंदवात्मक द्रष्टिकोण :- हेगल काल सम्बन्धी अपने मत मे उपयुक्त तीनों विचारो का समन्वय किये है | एक तरफ हेगल काल को अनुभव पूर्व बुद्धि का साँचा मानते है तो दूसरी और उसकी वस्तु जगत में उपस्थित भी अनिवार्य मानते है | इस प्रकार आत्मगत और वस्तुगत दोनों मानते है | एक तरफ काल के बिना अनुभव या चिन्तन असंभव है तो दूसरी तरफ काल के बिना वस्तु का अस्तित्व भी असंभव है | प्रत्येक वस्तु के अस्तित्व का एक हल होता है |४

भारतीय परंपरा मे कालविषयक चिन्तन अति प्राचीन काल से हुआ है | वेद, उपनिषद, पुराण और महाकाव्यों मे इसके काल के संबंधो मे पर्याप्त विचार किया गया है | ऋग्वेद में जल के सागर में "संवत्सर" को उत्पन्न माना गया है | अंतिम वेद अथर्ववेद मे काल चिन्तन का विकसित रूप मिलता है | वहाँ पर काल और गति का तादात्म्य दिखाया गया है और गति या परिवर्तन को काल के बिना असंभव माना गया है | यहाँ काल को स्वयंभू, सृष्टिकर्ता, पालक और संहारक बताया गया है | काल ही समस्त लोको में व्याप्त है | आरण्यकों और ब्राह्मणो में युग, संवत्सर, ऋतु, मास, पक्ष, दिवस, मुहूर्त और क्षण आदि का वर्णन मिलता है|५

श्वेतास्वस्तर उपनिषद में ब्रह्म को काल का कर्ता नही लेकिन प्रेरक बताया गया है | मैत्रायनी उपनिषद में काल को सबकी योनि के रूप में लिया गया है | तथा ब्रह्म के रूप में उसकी उपासना करने को कहा गया है और जीव को उत्पन्न करनेवाले के रूप में भी उल्लेख किया गया है | कैवलयोपनिषद में काल को ब्रह्म से अभिन्न बताया गया है |६

पुरानो में काल को परमतत्व के रूप में दिखाया गया है | भागवत पुराण में काल को ईश्वरीय शक्ति के रूप मे समस्त सृष्टि का नियामक और संहारक बताया गया है | विष्णु पुराण में काल के ब्रह्म का रूप कहा गया है | सृष्टि के प्रारम्भ में काल को प्रकृति और पुरुष में संयोग करानेवाला कहा गया है| काल अनादि और अनंत है | इसीलिए संसार की उत्पति, पालन और संहार का क्रम कभी रुकता नहीं है | प्रलय की अवस्था में विष्णु का काल रूप प्रवृत होता है| योग वरिष्ठ मनुस्मृति, अर्थशास्त्र आदि में अक्ल चिन्तन विस्तार से किया गया है |

जैन दर्शन में काल चिन्तन :- उमास्वाति काल के विषय में लिखते है कि "द्रव्यो कि वर्तना, परिणाम क्रिया नवीनत्व या प्राचीनत्व काल के कारण ही संभव है" | जैन दर्शन में काल को नास्तिकाय द्रव्य माना गया है | काल सत है | क्योंकि वह उत्पति, विनाश और नित्यधर्मों से युक्त है | काल के कारण ही पुद्गल तथा जीव में निमितकारण होता है | पुद्गलिय परिवर्तन में काल पुद्गल कि गति में सहायक बनकर मात्र निमितकारण होता हैं | काल के बिना जगत का विकास असंभव होगा | जैन दर्शन में काल के दो भेद है | व्यावहारिक काल और पारमार्थिक जल व्यावहारिक काल का आधार होता है अल परिवर्तन में सहायक, नित्य और अनंत होता है | व्यावहारिक काल जीवन या पुद्गल कि गति में अभिव्यक्ति हतो है | व्यावहारिक काल का आदि और अंत होता है | उसकी गणना समय, निमेष, काष्ठा, कला, दिन, रात, मास, दिवस, अयन और संवत्सर में कि जाती है | व्यावहारिक काल स्वयं परिवर्तन विकास और परिवर्तन-विनाश का विषय होता है | इसे जैन दर्शन में क्रमश: उत्सर्पिनी तथा अवसर्पिणी कहा जाता है | काल कि महतम इकाई उत्सर्पिनी तथा उपसर्पिणी कहा जाता है |७ काल कि महतम इकाई उत्सर्पिनी तथा उपसर्पिणी का योग होता है |

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

बौद्ध दर्शन में काल चिन्तन :- बौद्ध दर्शन में ग्रन्थ 'मिलिंद प्रश्न' में राजा मिनेन्डर के प्रश्नों के उतर में नागसेन ने कहा है कि काल सें अभिप्राय भूत, वर्तमान और भविष्य से होता हैं | काल का संस्कार से आंतर संबंध होता है | जो संस्कार कार्य उत्पादन कार चुके है | उनके लिए काल कि सता नहीं है | लेकिन जिन संस्कारो ने अभी कार्य करने कि शक्ति है | उनके लिए काल कि सता नहीं है | बौद्ध दर्शन के निर्वाण कि सता को कालातीत माना गया है | अविधाभूत, वर्तमान और भविष्य का कारण है | काल का आदि और अंत अरपात है तथा काल को सापेक्ष स्वीयकर किया गया है |८

न्याय - वैशेषिक दर्शन में काल चिन्तन :- इन दोनों दर्शन में काल को द्रव्य स्वीकार करके नित्य माना गया है | काल को समस्त पदार्थो का निमितकारण और जीव का आधार माना गया है | काल उत्पति और विनाश का कारण है | क्योंकि उत्पति-विनाश काल से युक्त कहे जाता है | काल क्षीण, तीव्र, निमेष, काष्ठा, कला, मुहूर्त, याम, दिनरित, पक्ष, ऋतु, अयन, वर्ष, युग, कल्प, मन्वंतर प्रलय और महाप्रलयों के व्यवहार का कारण है | न्याय वैशेषिक दर्शन में काल के विभाजन को औपाधिक मानतें हे तथा बौद्ध दर्शन के काल के विभाजन कि स्वाभाविकता का खण्डन करते हुए तर्क प्रस्तुत करते है कि काल केविशेष क्षणों की सता में कोई प्रत्यक्ष या अनुमानिक साक्ष्य जब विशेष घटनाए घटती है तभी हमे इनका अनुभव होता है |९ काल की सहज विशेषता के विषय में कोई प्रत्यक्ष या प्रत्यक्ष जनित आनुमानिक साक्ष्य नहीं मिलता हैं | यदि काल का विभाजन, स्वाभाविक है तो उसे नित्य होना चाहिए तथा एसी स्थिति में भूत, वर्तमान, भविष्य, परत्व, अपरत्व, आदि का भेद निरर्थक होय जायेगा | इस प्रकार बौद्धो का काल विभाजन स्वाभाविक नहीं है | वैशेषिक दर्शनमे अभाव पदार्थकों कालके संदर्भमे समजाया है। जैसे की प्रागभाव, ध्वंसाभाव और संसार्गाभाव को दर्शाया है।१०

सांख्य-योग में काल चिन्तन :- इन दोनों दर्शनों में काल के सूक्ष्मतम विभाग को क्षण कहा गया है | क्षण के द्वारा ही विकास होता है और यही समस्त परिवर्तनों का आधार भी है | आचार्य विज्ञान भिक्षु ने क्षण को गुण कहा है | क्षण का मापन करते हुए बताया गया है की एक परमाणु पूर्व देश से उतर देश तक पहुँचने में जितना समय लेता है | उसे क्षण कहते है | क्षणों के अविच्छिन्न प्रवाह को क्रम कहा गया है | लेकिन क्षणों के क्रम का अनुभव हमें वस्तुओं के कारण होता है | अत: सांख्य-योग में क्रम को अस्वीकार किया गया है वर्तमान क्षण को भूत और भविष्य की संतति श्रृंखला नहीं माना गया है | सांख्य दर्शनमे परमाणुवाद की चर्चा करते हुए बताया है की जो आण्विक महाभूत है और अनआण्विक महाभूत का गठन होने के लिए दिक और काल की आवश्यकता होती है।११

मीमांसा दर्शन में काल चिन्तन :- जैमिनी काल को कर्म व्याप्त मानते है | उन्हो ने काल के कर्म को निर्धारित करने वाला स्वीकार किया है | काल के धर्म को निर्धारित करनेवाला स्वीकार किया है | काल धर्म का परिणाम नहीं वरन वाहक है | यदि वैदिक मंत्रो सही ढंग से उच्चारण किया जाय तो हम काल के नियमों का पालन करते है | काल का ईश्वर के रूप में मानवीकरण नहीं किया जा सकता है | क्योंकि ईश्वर होने पर पर उसे सृष्टा और पालक होना पड़ेगा | जब काल की इस रूप में परिकल्पना नहीं की जा सकती है | काल स्वयं अप्रभावित रहते हुए समस्त वस्तुओं का प्रभावित करता है| काल कि सता अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए है| काल का निर्बाध प्रवाह इच्छाओं कि अनंत श्रृंखला के समान है | इसीलिए काल को इच्छा संतति का प्रतिनिधित्व करनेवाला कहा गया है | मीमांसा दर्शन के काल को सृष्टि कारण नही मानते है | प्रभाकर और कुमारिल दोनों

काल को द्रव्य मानते है | काल एक नित्य और सर्वव्यापक है | व्यावहारिक उपयोगिता (काल गणना) के लिए इसके विभाजन को स्वीकार किया गया है |१२

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

वेदांत दर्शन में काल चिन्तन :- शंकराचार्य काल को अविध्या का कार्य मानते है | कार्य होने से उसका आदि और अंत भी है | मधुसूदन सरस्वती ने काल को अविध्या का गत्यात्मक रूप स्वीकार किया है| अद्वैत वेदान्त में काल कि परमार्थिक सता नहीं स्वीकार कि गई है, पर व्यावहारिक सता कि गई है | रामानूज काल को उचित तत्व मानते है | माध्वाचार्य काल कि व्यापक सता स्वीकार करते है तथा काल को प्रकृति से उत्पन्न मानते है | काल सभी पदार्थो का उपादान कारण भी है | किन्तु व्यावहारिक काल को वे सत का अंश मानते है | कर्म और स्वभाव काल के अंश है | काल सत, रज और तम में क्षोभ उत्पन्न करनेवाला है | १३

काल का ज्ञान :- न्याय-वैशेषिक काल का ज्ञान आनुमानिक मानते है | किन्तु इसे प्रत्यक्ष का विषय मानते है | किन्तु इसे प्रत्यक्ष का विषय मानते है | विशेषण के रूप में भी स्वीकार किया जा सकता
है | कुमारिलभट काल को प्रत्यक्ष ज्ञानगम्य मानते है | काल में रूप के अभाव के कारण प्रत्यक्ष योग्यता का अभाव नहीं सिध्ध होता है | यह प्रात: काल है | इस प्रकार के वाक्य काल कि प्रत्यक्ष योग्यता को प्रामाणिक करते है | अद्वैत वेदान्त काल के साक्षात प्रत्यक्ष को नहीं मानता है | लेकिन वर्तमान के साथ प्रत्यक्ष होना स्वीकार करता है | रामानुज काल को अपरोक्ष अनुभवी का विषय मानते है |१४

काल कि सापेक्षता या निरपेक्षता :- योग वशिष्ट में काल कि सापेक्षता को विचारों पर आधारित माना गया है | व्यक्ति चितवृति के परिवर्तन से घटनाओं का अनुभव कर सकते है| चितवृति के परिवर्तन से एक क्षण कल्प के समान और सुख का एक दिन घण्टा में व्यतीत होता है, डॉ सम्पूर्णानंद काल का विभाजन - वास्तविक काल और व्यावहारिक काल करतें है और दोनो का सापेक्ष बताते है | पुराणों में काल को पारमार्थिक अर्थों में निरपेक्ष बताया गया है |

हर एक दर्शनमे काल का एक विशिष्ट महत्व है। किसी दर्शन या दार्शनिक की चिंतन प्रणालिमे किसी न किसी रुपमे काल का चिंतन दर्शाया गया है। काल चिंतन प्रणालिमे किसी व्यक्ति या विचार का अधिकार स्थापित नहीं सकते है।

संदर्भ सूची :-

1. समकालीन पाश्चात्य चिंतन
2. उपनिषद नवनीत
3. तत्वमीमांसा दर्शन
4. समकालीन पाश्चात्य चिंतन
5. भारतीय दर्शन
6. श्वेतास्वस्तर उपनिषद
7. जैन दर्शन
8. बौद्ध दर्शन
9. न्याय - वैशेषिक दर्शन
10. न्याय - वैशेषिक दर्शन
11. सांख्य - योग दर्शन
12. मीमांसा दर्शन
13. वेदान्त दर्शन
14. आचार्यकी चिंतन परंपरा